R. Num. of M.A. II Sem's प्र...

(1)

गुण ! —

(1) बण्डूरा के सामाजिक शिक्षण दृष्टिकोण के संबंध में जोन्सी एवं जिगलर (1985) का विचार उल्लेखनीय है। इनके अनुसार प्रमाणनीयता की कसौटी पर यह सिद्धान्त काफी संतोषजनक है। इस सिद्धान्त में ऐसे प्रत्ययों का उल्लेख किया गया है, जिनका आनुभविक परीक्षण संभव है।

(2) यह सिद्धान्त शोध-मूल्य के दृष्टिकोण से भी अत्यन्त संतोषजनक है। यौन-भूमिका विकास, परोपकारी-व्यवहार, सामाजिक कौशल आदि क्षेत्रों में इस सिद्धान्त ने शोध कार्यों को उत्प्रेरित किया है।

(3) आन्तरिक संगति मापदण्ड पर भी यह सिद्धान्त सफल प्रमाणित होता है। इस सिद्धान्त में जिन प्रत्ययों का उल्लेख किया गया है, उनके बीच संगति पाई जाती है। मानव-स्वभाव से संबंधित इस सिद्धान्त की व्याख्या से हम असहमत हो सकते हैं, परन्तु हम वास्तविकता से इनकार नहीं कर सकते कि यह व्याख्या इस सिद्धान्त के दूसरे प्रत्ययों से संगत है।

(4) यह सिद्धान्त मितव्ययिता मापदण्ड पर भी सफल प्रमाणित होता है। बण्डूरा ने बहुत कम प्रत्ययों के आधार पर अपने सिद्धान्त को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। इन प्रत्ययों का सीधा संबंध सामाजिक शिक्षण प्रपंचों या सामाजिक संज्ञान से है, जिनकी व्याख्या इसका अभिप्राय है।

(5) सामाजिक शिक्षण सिद्धान्त ने विभिन्न व्यवहारों की उत्पत्ति में वातावरण से संबंधित चरों के महत्त्व पर बल देकर नैदानिक मनोविज्ञान तथा व्यक्तित्व सिद्धान्त में महत्त्वपूर्ण योगदान दिए हैं। इस सिद्धान्त ने सफलतापूर्वक इस बात की व्याख्या प्रस्तुत की है कि किस

आधार पर सीख सकता है, किन्तु गति-दोष के कारण उसका निष्पादन नहीं कर सकता है। गति-कौशल की क्षमता अभ्यास से बढ़ती है, जिससे जटिल निष्पाद का अर्जन जल्दी होता है, और उसमें सुधार होता रहता है।

(IV) प्रोत्साहन (Incentive) :— अवलोकनात्मक शिक्षण की इस अन्तिम अवस्था में व्यक्ति निष्पादन करता है। जब अवलोकित व्यवहार लाभदायक होता है तथा पुरस्कार मिलने की आशा होती है तो व्यक्ति उस व्यवहार को निष्पादित करता है। जब वह व्यवहार हानिप्रद होता है तथा दण्ड का भय रहता है तो व्यक्ति उस व्यवहार को निष्पादित नहीं करता है। इस प्रकार अवलोकित व्यवहार का परिणाम व्यक्ति के लिए धनात्मक या नकारात्मक प्रोत्साहन का काम करने लगता है।

बण्डूरा के सामाजिक शिक्षण सिद्धान्त की ऊपर वर्णित चार प्रक्रियाओं में प्रोत्साहन तथा प्रबलन के महत्व स्पष्टत: दृष्टिगोचर होता है। प्रबलन का प्रभाव शिक्षण और निष्पादन दोनों पड़ते पाया जाता है। हम उस कार्य का अनुसरण करते हैं, जिसके द्वारा हम दूसरे लोगों को पुरस्कृत होते देखते हैं। इस अवलोकन के आधार पर हम प्रबलन के स्तर के संबंध में प्रत्याशा करने लगते हैं। यदि पूर्वाभासी प्रबलन हमारी प्रत्याशा के स्तर के समान या ऊपर होता है तो हम निष्पादित करते हैं और यदि प्रत्याशा का स्तर से निम्न स्तर का होता है तो हम निष्पादन नहीं करते हैं।

मूल्यांकन :—

बण्डूरा के सामाजिक शिक्षण दृष्टिकोण को ठीक-ठीक समझने के लिए इस सिद्धान्त के गुण-दोषों की विवेचना आवश्यक है।

K'Nand M.A II Sem 6 ③

है कि इस दृष्टिकोण में समग्रता का गुण अपेक्षाकृत कम है। साथ-ही-साथ कार्यात्मक सार्थकता के दृष्टिकोण से भी यह सिद्धान्त अधिक संतोषजनक नहीं है।

(3) मनोवैज्ञानिक आलोचकों का मत है इस दृष्टिकोण में जैविक कारकों के महत्त्व की उपेक्षा की गई है।

(4) ऐटकिंसन (1998) के अनुसार इस सिद्धान्त में वातावरण के महत्त्व पर अधिक बल दिया गया है और जन्मजात वैयक्तिक भिन्नताओं की उपेक्षा की गई है।

(5) यह सिद्धान्त वस्तुनिष्ठता के दृष्टिकोण से उद्दीपन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त से कमस्तर का है। फलतः उद्दीपन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त में परिमाणन तथा मापन का गुण जितना पाया जाता है, उतना सामाजिक शिक्षण सिद्धान्त में नहीं।

(6) बण्डूरा के सामाजिक-शिक्षण दृष्टिकोण व्यक्तित्व-गुणों की व्याख्या करने में भी सफल नहीं है। इस सिद्धान्त में इस बात की व्याख्या की गई है कि व्यक्तित्व किन-किन शील-गुणों से संरचित है। इस आधार पर सामाजिक शिक्षण-सिद्धान्त की तुलना में आलपोर्ट या कैटल (1950) का सिद्धान्त अधिक सफल है।

ऊपर वर्णित आलोचनाओं के बावजूद बण्डूरा के सामाजिक शिक्षण दृष्टिकोण का अपना महत्त्व है। इसे अन्य सिद्धान्तों के साथ तुलना करने पर उद्दीपन-प्रतिक्रिया सिद्धान्त से अधिक संतोषप्रद पाया गया है।

Knand